Special Addition Oct. 2018

ISSN No. 2395-2725

An International Multidisciplinary Research Journal

शोध समग्र

संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव

प्रकाशक – प्राचार्य, शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.)

CONTACT US ON

E-mail – shodhsamagra@gmail.com

Website – www.mpcolleges.nic.in/hoshangabad

Contact No.:– 07574–250132

9425044500, 9826280529, 9827240008

Scanned by CamScanner

40	अर्पिता चौधरी	संगीत का चिकित्सा क्षेत्र में महत्व	93
41	डॉ. नीता चौबे	भारतीय संगीत का चिकित्सा क्षेत्र में महत्व	95
42	रविन्द्र टांक	संगीत और आध्यात्म	97
43	विशाल कुमार साहू	संगीत के प्रभाव से चिकित्सा	100
44	स्वाति गौर	त्नाव दूर करने में संगीत की भूमिका	103
45	डॉ. रोहित चावरे	संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव	107
46	डॉ. अर्चना गौर	संगीत से मानसिक समस्या का समाधान	109
47	डॉ. असुंता कुजूर	मध्यकालीन भारतीय इतिहास में संगीत का महत्व	111
48	डॉ. राहुल स्वर्णकार	तबला वादन के घराने एक तथ्यात्मक दृष्टिकोण	115
49	अनीस कुमार यादव	घराना – एक दृष्टिकोण	116
50	कंचन सिंह	संगीत का चिकित्सा क्षेत्र में महत्व	119
51	इंद्रावती डाबर रविन्द्र सिंह वास्केल	किशोरों के व्यक्तित्व विकास में संगीत की भूमिका	122
52	पवन शुक्ला	संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव	125
53	कल्याणी राय	संगीत और मनोवैज्ञानिक का संबंध एवं संगीत की शैक्षणिक पद्धतियॉ	126
54	आकाश जैन	वैदिक संस्कृति में संगीत	129
55	देवेन्द्र कुमार गुप्ता	शास्त्रीय संगीत एवं फिल्म संगीत में जनरुचि	132
56	दुर्गेश पाण्डेय	संगीत का मानव जीवन पर प्रभावः इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों एवं मीडिया के माध्यम से	133
57	Dr. Rashmi Shrivastava	Music Therapy	135
58	डॉ. विनीता माहुरकर	संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव	137
59	श्रीमती आभा वाधवा कु. विन्नी वाधवा कु. निधि वाधवा	तनाव दूर करने में संगीत की भूमिका	140
60	कु. आकांक्षा पाल	संस्थागत संगीत– शिक्षण पद्धतिः उपलब्धियॉ, समस्याएँ एवं समाधान	142
61	Dr. Neeta Puranik	Therapeutic Effects of Music on Stress	144
62	डॉ. वीणा मिश्रा	संगीत का मनोविज्ञानिक प्रभाव	146
63	डॉ. भारती दुबे	संगीत एवं स्वास्थ्य	147
64	डॉ. वर्षा चौधरी	तनाव दूर करने हेतु संगीत की भूमिका	149
65	डॉ. रामबाबू मेहर	प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक परंपरा में संगीत	151
66	डॉ. संगीता अहिरवार	संगीत का प्राणी जीवन पर प्रभाव	153
67	Ms. Shobhanjali Raghuwanshi	Role of music at work for Increasing Employee productivity	154

Scanned by CamScanner

तबला वादन के घराने एक तथ्यात्मक दृश्टिकोंण

डॉ. राहुल स्वर्णकार*

भारतीय संगीत में तबला वादय का प्रचार जब से हुआ है तब से तबला अपनी अटखेलियों के गुण के कारण समूचे भारत के संगीत में अपनी चंचलता से प्रत्येक सुनकार का मन मोह ही लेता है। इसकी चंचलता को युवा और तहजीब, संस्कारी बनाने के लिए नीति निर्धारक लोगों ने अपनी परंपरा या सांगीतिक बंधनों के ताने बाने में इसे शामिल किया और अन्य विधाओं की भाँति तबले को भी घराने के नियमों की मुख्य धारा से जोड़ लिया । यहाँ से तबले का सफर भी अन्य विधाओं के समकक्ष सुचारू रूप से चलने लगा। घरानों ने अपने सिद्वांत निर्धारित कर उन लोगों को समान अधिकार दिला दिया जो तात्कालिक समय में साहित्याभाव झेल रहे वादय को समकक्ष मनाने में आनाकानी का विचार मन में रखते थे। घरानों का चलन बढ़ने और लोगों की जरूरतों को निभाने में तबला और उसका साहित्य चहुँ दिशाओं में अपना परचम लहराने लगा था। किन्तु इसके उदासीन परिणाम मिलने तब प्रारंभ हो गये जबकि प्रत्येक वादक कलाकार अपने आप को किसी ना किसी घराने का वंशज बताने लगे और सकारात्मक शिक्षा के आभाव में प्राप्त सबक या बंदिशों को अपने सृजनात्मक गुण से बजाकर उसे परंपरा में ढाल कर प्रस्तुति को रोचक बनाने लगे, जो घरानों का पूर्ण रूप से निर्वाह करने वाले लोगों को स्वीकार नहीं था। शायद इसी अस्वीकार की भैंट चढें कलाकारों को घरानेदार पद्धति होते हुए भी उन्हें घरानों के विरोधी दल निर्मित करने की जरूरत आन पड़ी और समूचे संगीत जगत के समक्ष यह प्रश्न रखा कि घराने की उपादेयता क्या है? क्या एक सकारात्मक शिक्षा कि पद्धति किसी कलाकार को उसका स्थान दिलाने मे समर्थ है अथवा नहीं। इस पर विस्तार से चर्चा की जायेगी भारतीय संस्कृति में घराना भाब्द इसके जन्म से ही प्रचार में है। जो प्राचीन शब्द संम्प्रदाय से मिलता है।

भारतीय संस्कृति में सम्प्रदाय शब्द का प्रयोग प्राचीन समय से होता रहा है जो संस्कृत से लिया गया है "सम्" का अर्थ पूर्ण रूप से, समान रूप से और ''प्रदाय'' का अर्थ है प्रदान करना अर्थात् संप्रदाय का अर्थ पूर्ण रूप से प्रदान करना है। शारंगदेव ने भी संगीत रत्नाकर में सुसम्प्रदाय शब्द का प्रयोग किया है।[1] अर्थात् सम्प्रदाय शब्द घराना से भी प्राचीन है। जिसमें नाद या स्वर संपूर्ण ब्रम्हांड को सम्मोहित करता है। हमारे इस सनातन संगीत में कुछ भौलिगत भिन्नताऐं तो हो सकती है किन्तु घराना शब्द हमारी सनातन संस्कृति का प्रतीक नहीं है।[2]

किन्तु वर्तमान समय में घराने शब्द बड़े ही विवाद का विशय है । घराने का तात्पर्य यह है कि परंपराओं की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, ऐसे में कोई दो कलाकार एक दूसरे की संपूर्ण छवि को कैसे प्राप्त कर सकता है। यदि नवीनीकरण घराने के भाव को बोझिल करती है तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक जैसी छवि लेकर जन्मेगा और अंत तक एक ही छवि लेकर जीयेगा। ऐसे में श्रंगारिकता के भाव की आवश्यकता समय के साथ समाप्त होने लगेगी। तबले में प्रयुक्त किये जाने वाले शुद्ध वर्ण प्रायः समस्त घरानों (खुले या बंद बाज) में समान रूप से प्रयोग किये जाते हैं। ज्ञातव्य है कि सीमित वर्णों के प्रयोग तथा एकल और संयुक्त वर्णों की निर्मिती से तबले का साहित्य निरंतर विकास कर रहा है। क्योंकि निर्धारित वर्णो के अतिरिक्त कोई ऐसी पद्धति नहीं है जिसके प्रयोग से कोई अभूतपूर्व बोलों का वादन किया जा सके। जब तबले का जन्म ही रंजकता प्रदान करने के लिये किया गया है तो इस रंजनता को लोग अपनी चार दीवारी में सीमित रखना क्यों चाहते हैं। दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि वर्तमान में क्या किसी खास घराने के कलाकार ही प्रदर्शन में निपुण होते हैं और अन्य घराने के कलाकार मात्र ज्ञान अर्जन से जुटे हुए हैं। प्रदर्शन से उनका सारोकार ही नहीं है। सदैव से ही कुछ एसे वादकों का वर्चस्व तबला वादन के क्षेत्र में रहा है जो स्वयं की क्षमताओं से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम रहे हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि शिक्षा की तकनीक और माध्यमों का भी प्रदर्शन पर गहरा असर पढ़ता है। समस्त पक्षों को ध्यान में रखकर किया गया अभ्यास ही मंच पर अपना प्रभाव छोड़ने में सक्षम रहता है। इस स्थिति में किसी एक घराने की भौली में वादक अपने आप को क्यों स्थिर रखे। हाँ यह बात आव यक है कि उच्च स्तर तक पहुँचने में लगने वाला समय दीर्घ कालीन अवश्य होता है। बिना कठोर अवधि को पूर्ण किये कोई वादक कम से कम इस लायक तो नहीं हो सकता की वह समझदार लोगों में अपनी जगह बना सके। कोई भी कलाकार सबसे पहले अपने समूह में तथा कलाकारों के बीच में ही प्रसिद्ध होता है। बिना इसके अन्यत्र वह कहीं और अपनी जगह नहीं बना सकता है।

ध्वनि की विशेषता या गुण के समान ही एक वादक कलाकार दूसरे वादक के समान वादन नहीं कर सकता जिस तरह एक ही स्वर या वर्ण को अलग–अलग वाद्यों पर बजाया जाये तो प्रत्येक वाद्य पर उसकी ध्वनि अलग–अलग पहचानी जा सकती है।[3] ठीक उसी तरह वादन सामग्री समान होते हुए भी एक ही स्वर के दो तबलों पर वादन करने पर दोनों के काकू में भेद में अंतर अलग दिखाई देता है। अर्थात काकू अपनी वि ोशता के समान ही मनुष्य के चित्त को भी प्रभावित करती है। एक समय में एक ही सबक को एक ही परंपरा के दो अलग–अलग वादकों द्वारा प्रदर्शन हो तो भी दोनों में अंतर आसानी से समझा जा सकता है। ऐसे में किसी अमुक घराने की शैली हूबहू निर्वाह करने का दाबा करने वाले सज्जनों के मन और चित्त सदैव उसे अपनी मन

*सहायक प्राध्यापक, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

की बात हाथों से निकालने पर विवश करते हैं।[4] और यही से बात खुले आकाश के नीचे 'ऐकला चलो' की नीति से जोड़ देती है। प्रत्येक वादक अपनी क्षमतानुरूप ही वादन कर सकता है। वर्तमान में यह असंभव सा प्रतीत होता है कि कोई शिष्य किसी बाज को बिना किसी अन्य शैली से प्रभावित हुये सतप्रतिशत आत्मसात् कर ले। यदि ऐसा संभव है तो निश्चित ही वह विषय या तो इन्द्री विहीन पशु है जो फल की इच्छा के विरुद्ध खेत में जोता जाता है या मात्र मशीन है जिसकी अपनी कोई सोच नहीं होती। किन्तु फिर भी भारतीय संस्कृति परंपरा का निर्वाह तो करती है। ऐसे में कुछ पेशेवर गायकों वादकों के दल का काम शिक्षा प्रदान करना होता है। इसीलिए उस विद्यालय को घराना के नाम से ख्याति मिलने लगती है और स्वार्थवश विद्यार्थी को अपने दल में सम्मिलित कर लिया जाता है किन्तु हर काल मे ऐसे प्रयोग धर्मी क्रांतिकारी कलाकार तो हो ही जाते हैं जो अपनी सृजनात्मक, कलात्मक प्रतिभा का परिचय देने के लिए अपने पूर्वजों द्वारा खींची गई परंपराओं की लक्ष्मण रेखा का साहसिक उल्लघंन करते हैं।[5]

जिससे नई श्रेणिओं का जन्म होता है उदाहरण के लिए उस्ताद मुनीर खाँ के मुम्बई घराने को उनके वरिष्ठ शिष्यों उस्ताद अमीर हुसैन खाँ और उस्ताद अहमद जान थिरकवा के तमाम प्रयासों के बाद भी मान्यता नहीं मिली। बाद में थिरकवा खॉ साब ने मुरादाबाद घराना स्थापित किया किन्तु असफल रहे क्योंकि एक नया घराना बनाने के लिए आव यक है शैलीगत विभिन्नतायें, मौलिक विशेषताएँ तथा सुयोग्य शिष्य और वंश परंपरा।[6] दो अलग–अलग घरानों की विशेषताओं का यह संगम लोगों को अच्छा तो लगने लगा किन्तु दूसरी ओर घरानों की मौलिक शुद्धता में दरारें भी पड़ने लगी।[7]

आज का कलाकार घनघोर रियाज कर घराने का उतना निर्वाह नहीं करता जितना वह किसी पसंदीदा या नामी कलाकार को श्रवण कर उसके जैसा बनाने की चेष्ठा करता है। 8
पहले के कलाकारों को सीमित श्रोताओं को संतुष्ट करना होता था जिससे कला एक निश्चित श्रोताओं की रूचि पर केन्द्रित था किन्तु विराट परिवर्तनों और देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप शैलियों में आवश्यकतानुरूप परिवर्तन समय की मांग बन गई।[9] यदि श्रोताओं की रूची या मांग कहती है की अमुक शैली या घराने का वादन या बंदिशों सुनना चाहते हैं तो प्रत्येक वादक अपनी वादन शैली में नित नये परिवर्तन कर वादन में हर वह बात सम्मिलित करता है जो समय की मांग है और चोटी के कलाकार जो वादन सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। साहित्य के इसी प्रयोगवाद ने एक प्रकार का निश्चित प्रारूप निर्धारित कर दिया है जो एकल वादन के लिए आवश्यक होना चाहिए। इस प्रारूप में वही वादक अपनी शैली में प्रयोग कर परिवर्तन कर सकता है जिसने भले ही किसी घराने से शिक्षा अर्जित न की हो किन्तु इतना ज्ञान अवश्य प्राप्त किया हो जो कि बंदिशों की शुद्धता पर कोई आंच न आने दे।

ऐसे में यह सवाल है कि प्रयोगवादी शैली से क्या शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र बड़ा है ? किस मायने में बड़ा है? यदि कला की बढ़ोत्तरी का मापदंड कार्यक्रमों और श्रोताओं की तादाद और प्रयोगवादी शैली में वृद्धि है तो क्षेत्र बड़ा है किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से कला में कितना इजाफा हुआ है यह सवाल भी अहम है।[10] प्रयोगवादी शैली में कला में दिमाग अधिक बोलता है दिल कम, पर दिल बोलता है तो कहर बरपाता है। यदि घरानेदारी को ध्यान में रख कर ही सभी कार्यक्रम होते और शिक्षा दी जाती तो तबला वादकों का अकाल पड़ने में देर नहीं लगेगी क्योंकि ऐसे कितने तबला वादक भारत में स्थापित हैं जो किसी शुद्ध घराने के बाज को अपनी शैली में कायम रखते हैं। यह एक शोध का विषय है, क्योंकि भले ही शुद्ध बाज या घराने के कलाकारों का बर्चस्व उच्च स्तरीय मंचों, समारोहों पर है किन्तु छोटे और स्थानीय कार्यक्रमों में भी गाना बजाना तो होता ही है। कम से कम उसकी गुणत्ता तो छोटे और स्थानीय कलाकारों के द्वारा पूरी और स्थिर तो होती ही है। कम से कम तबला वादन की बागडोर ऐसे तबके ने भी ले रखी है जो भले ही घराना पद्धति से नाता न रखता हो पर सृजनशीलता से समाज में अपना स्थान निर्धारित करने में सफल हुआ है। अब ऐसे स्थान पर घराने की तबियतदारी को हम लेकर बैठे रहें तो यह न्याय नहीं होगा ऐसे कलाकारों कें साथ जो निरंतर अभ्यास से अपने वादन को निखारने में सक्षम हैं। किन्तु किन्हीं मायने में वे शुद्ध रूप से किसी परंपरा से जुड़े नहीं हैं। यही स्थिति तबला वादकों के बड़े समूह पर लागू होती है अन्यथा राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को ही प्रत्येक स्थान पर आमंत्रित किया जाता जहाँ उनकी अपेक्षाऐं और मेहनताना कहीं अधिक होता है जबकि प्रतिभावान और गंभीर प्रकृति के वादक मात्र मंच की इच्छा में अपने आप को सिद्ध करने के लिए किसी भी स्तर पर जाकर अपनी कला का निर्वाह करने में जुटे हुए हैं। ऐसे प्रत्येक तबके के वादक को यह अधिकार होना चाहिए कि वह स्थानीय स्तर से उपर उठकर आगे आये और स्वीकारा जाये। क्योंकी संस्कार वही बढ़िया है जो स्व को भुलाकर अपनी पहचान बनाये रखे।[11]प्रतिष्ठित समारोहों में तबला एकल वादन सुनने के पश्चात उसकी शुद्धता के सम्बन्ध में जितने लोग तारीफ करते हैं उनमें से भी सबसे बड़ा वर्ग केवल तबला वादकों का ही होता है इनके अतिरिक्ति एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो मात्र ध्वनि प्रधान गति, गमक, तैयारी, इत्यादि के सम्बन्ध में अपने मत देते हैं तो कई लोग विस्मृत होते है कि तारीफ करें तो किस पक्ष की। फिर वे अन्य लोगों से उसकी वाह वाही का हिस्सा पहचान लेते हैं। किन्तु अन्य पक्षों से अनभिज्ञ होते है।[12]

Scanned by CamScanner

सुधिजनों के ऐसे समूह को किसी घराने की वादन शैली से कोई सारोकार नहीं होता वे मात्र चमत्कार, सृजनशीलता, प्रयोगात्मकता और गति को ही सब कुछ मान लेते हैं और संगीत जगत में उनका मान बढ़ना प्रारंभ हो जाता है। और साथ ही लोगों की पसंद बनने लगते हैं।यह एक बड़ा प्रश्न समस्त संगीत जगत के समक्ष है, जो केवल घराना पद्धति का अनुयायी है। यह आवश्यक नहीं कि अच्छा कलाकार निर्मित करने का मूल स्थान मात्र घराना ही है। ऐसे कई अच्छे वादक हैं जिनकी प्रसंशा प्रत्येक मंच पर होती है वे मात्र एक सकारात्मक सोच के साथ ही अभ्यास करते हैं। सही मायनों में यदि यह कहा जाए कि सकारात्मक वादन शैली का शुद्धता से अभ्यास किया जाये तो वही पद्धति घराना पद्धति के समकक्ष मानी जानी चाहिए।

घरानेदार और गैरघरानेदार दोनों पद्धति के अनुयायीयों को अधिक से अधिक नये प्रयोग करने चाहिए क्योंकी सभी का मूल उद्देश्य तो तबले का प्रचार करना ही है। ताकि आम लोगों में गायन वादन को लोकप्रिय बनाया जा सके और जैसे–जैसे प्रयोगों को गुनियों और जानकारों से मान्यता मिली वे ही परंपरा से जुड़े रहे और अंततः इसी आकर्षण से निरंतर नवीन प्रयोग होते चले गए।[13] वहीं समस्त घराने अपने अपने आप में अपनी शैलियों के लिए हमेशा से ही अपनी विशेषताओं पर अडिग रहे और सभी परिवर्तनों और आकर्षण से होते चले गए प्रयोगों से अंत में बनारस घराने की नींव रखी गई जो शेष सभी घरानों से अलग दिखाई देता है क्योंकि इसका विस्तार व विकास किसी एक दिशा में नहीं अपितु चतुर्दिक हुआ है। शायद इसी कारण तबले का कोई नया बाज अधिकृत रूप से प्रचार में नहीं आया।[14]

सृजनशील समाज में कलाकारों की स्थिति भी किसी शोधकर्ता से कम नहीं है। सांगीतिक प्रायोगिक कल्पना सदैव नवीन होती है क्योंकी इन्हीं निरंतर तथा अप्रत्याशित प्रयोगों से ही समस्त घरानों और बाज का चलन आज भी जारी है। अन्तर केवल इतना है कि संगीत के व्यवहारिक पक्ष में सभी विद्वान निरंतर नये प्रयोग को व्यवहार में लाते हैं जिन्हें अपनी कल्पना में डूबकर सृजन करते हुए आसानी से पहचाना जा सकता है ।

संदर्भ तालिका

1 मिश्र विजय भांकर भारतीय संगीत के नए आयाम कनि क पब्लिके न नई दिल्ली पृष्ठ 20
2. वही पृष्ठ 18
3 कुमार डॉ. रीना हिन्दुस्तानी संगीत का अवलोकन, कनि क पब्लिकेशन नई दिल्ली,पृष्ठ 126
4 शर्मा,प्रो.स्वतंत्र अनुभव पब्लिकेशन अलाहाबाद,पृष्ठ 22
5 स्मिता डॉ. शूची, आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, पृष्ठ 114,115
6 मिश्र विजय भांकर भारतीय संगीत के नए आयाम,पब्लिकेशन कनिश्क नई दिल्ली पृष्ठ 20
7 वही पृष्ठ 23
8 भार्मा शांतनु, प्रतिश्ठित सितार सरोद वादकों की साधना और संघर्ष, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली पृष्ठ.4
9 मिश्र विजय शंकर, भारतीय संगीत के नए आयाम, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली पृष्ठ 24,130,32
10 सिंह गजेन्द्रनाथ, सुरीले लोगों की संगत, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ 146
11 सिन्हा डॉ. ज्योति, भारतीय शाष्त्रीय संगीत में संगीत–सेवियों की स्थिति, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली
13 सिंह गजेन्द्रनाथ, सुरीले लोगों की संगत, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ 75
14 विजय शंकर, भारतीय संगीत के नए आयाम, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली पृष्ठ 216, 217

Scanned by CamScanner